

सक्रिय अधिगम प्रविधि के प्रयोग से अध्यापन-अभ्यास प्रक्रिया को प्रभावी बनाना

भगवती प्रसाद गेहलोत*



शिक्षक प्रशिक्षण के विभिन्न पाठ्यक्रमों में कक्षा-शिक्षण को विशेष स्थान प्राप्त है। वास्तव में यह प्रशिक्षु अध्यापकों के लिए एक अवसर उपलब्ध कराता है, जिसमें वह शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सिखीं तमाम चीजों को सूक्ष्म शिक्षण (Micro Teaching) के रूप में कक्षा में प्रयुक्त कर सकें। उक्त आलेख नवाचार पर आधारित सक्रिय अधिगम प्रविधि के कक्षा अनुप्रयोगों पर आधारित है।

शिक्षक द्वारा कक्षा में शिक्षण कार्य की सार्थकता तभी सिद्ध होती है, जब कक्षा में विद्यार्थी के चेहरे पर चमक, उल्लास और रुचि दिखाई दे। कालखंड की समाप्ति या विषय-वस्तु के अधिगम के पश्चात् उसके मुखमंडल पर संतुष्टि दिखाई दे इसके लिए जरूरी है शिक्षक का शिक्षण प्रभावशाली हो। चाहे वह शिक्षक प्रशिक्षित हो या अप्रशिक्षित या प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत। प्रशिक्षण संस्थानों में पूर्व माध्यमिक स्तर के अध्यापन-अभ्यास में डी. एड. छात्राध्यापकों के अध्यापन-अभ्यास के अवलोकन के दौरान यह देखने में आता है कि परंपरागत विधि आधारित पाठ योजना के अध्यापन-अभ्यास में कक्षा 6,

7, 8 के छात्र पर्याप्त रुचि नहीं लेते हैं। अध्यापन-अभ्यास के चलते कक्षा का वातावरण यांत्रिक और कभी-कभी नीरस हो जाता है। 35-40 मिनट का पीरियड शिक्षक केंद्रित होकर रह जाता है। एक बँधी-बँधाई प्रक्रिया में निर्देशों के अधीन पाठ समाप्त हो जाता है। छात्राध्यापक उसे गतिविधि केंद्रित नहीं बना पाते। अतः समस्या यह है कि पूर्व माध्यमिक स्तर पर भी शिक्षण को रुचिकर, गतिविधि केंद्रित बनाकर अध्यापन-अभ्यास को आनंददायी, छात्र की सक्रियता, अभिव्यक्ति व तर्क शक्ति के विकास से युक्त पाठ योजना का निर्माण कर छात्राध्यापकों द्वारा अध्यापन कार्य करवाया

* व्याख्याता, 3 जी, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान परिसर, मंदसौर (म.प्र.)-458001

जाए ताकि कक्षा का वातावरण संतुष्टीपरक बन सके।

अध्ययन-अभ्यास में ए.एल.एम.विधि की आवश्यकता—

वर्तमान में पूर्व माध्यमिक स्तर पर डी. एड. के छात्राध्यापकों द्वारा परंपरागत विधि आधारित पाठ योजनाएँ बनाकर अध्यापन-अभ्यास कार्य संपन्न कराया जाता है जिसके अवलोकन में यह पाया जाता है कि यह अध्यापन-अभ्यास यांत्रिक, नीरस व ऊबारू हो जाता है। अतः अध्यापन-अभ्यास में किसी सक्रिय विधि की आवश्यकता है ताकि अध्यापन-अभ्यास रुचिकर, आनंददायी व गतिविधि केंद्रित होकर छात्र को सक्रिय रख सके। इसके लिए सक्रिय अधिगम विधि आधारित पाठ योजना के अध्यापन-अभ्यास करवाकर कक्षा के छात्रों में आए परिवर्तनों को देखा जा सकता है। ए.एल.एम. (एक्टिविटी बेस्ड लर्निंग मैथड) आधारित पाठ योजना आवश्यक है—

- छात्राध्यापकों की अध्यापन-अभ्यास पद्धति में यथेष्ट सुधार हेतु।
- कक्षा में छात्र व शिक्षक की निरंतर सक्रियता हेतु।
- छात्राध्यापक ए.एल.एम. विधियों के प्रयोग करने में दक्ष हो सकें, इस हेतु व उपयुक्त शिक्षण विधि के अनुप्रयोग की समस्या दूर करने हेतु।
- पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्यापन-अभ्यास को बाल केंद्रित बनाने हेतु।

अध्ययन के उद्देश्य—

1. डी.एड. छात्राध्यापकों की अध्यापन-

अभ्यास पाठ योजना को उच्च प्राथमिक स्तर पर गतिविधि केंद्रित बनाना।

2. ए.एल.एम. के प्रयोग से अध्यापन-अभ्यास पाठ योजना को बाल केंद्रित, रुचिकर शिक्षण व सक्रिय अधिगम के लिए प्रेरित करना।
3. परंपरागत शिक्षण से हटकर शिक्षण में नवाचार करने के लिए रुचि जागृत करना।
4. ए.एल.एम. को एक नवाचारी शिक्षण के रूप में क्रियान्वयन के प्रभाव को परिलक्षित करना।
5. अध्यापन में सक्रियता बढ़ाना तथा विद्यार्थियों के मन में अधिगम के प्रति रुझान जागृत करना।

न्यादर्श—

इस क्रियात्मक अनुसंधान के लिए डाइट मंदसौर के डी. एड. द्वितीय वर्ष के 20 + 20 छात्राध्यापकों को यादृच्छिक विधि से सम्मिलित किया गया।

उपकरण—

इस अनुसंधान के लिए ए.एल.एम. आधारित अध्यापन-अभ्यास अवलोकन प्रपत्र को उपकरण के रूप में सम्मिलित किया गया।

कार्य प्रणाली—

छात्राध्यापकों को ए.एल.एम. विधि आधारित अध्यापन-अभ्यास पाठ योजनाएँ बनाने और उसके प्रस्तुतीकरण के संबंध में कालखंडों में बारी-बारी से ए.एल.एम. प्रभारी तथा क्रियात्मक अनुसंधानकर्ता द्वारा अभिमुखीकरण किया गया तथा छात्राध्यापकों को ए.एल.एम. विधि संबंधी

साहित्य उपलब्ध कराया। म.प्र. राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा प्रकाशित ए.एल.एम. की पाठयोजना से युक्त प्रकाशित (कक्षा, 6, 7, 8 की संस्कृत, सा. विज्ञान, विज्ञान, अँग्रेजी) पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध कराई गईं। उनके आधार पर मंदसौर नगर के नूतन मा. वि. व अन्य मा.वि. में कक्षा 6 और 7 में छात्राध्यापकों के ग्रुप लीडर द्वारा नमूना पाठ प्रदर्शित किया।

अध्यापन-अभ्यास अवलोकन के लिए अनुसंधानकर्ता द्वारा 25 बिंदुओं पर आधारित एक अवलोकन प्रपत्र का निर्माण किया गया। इसके पश्चात् अवलोकन के लिए डाइट के सहयोगी व्याख्यातागणों एवं संबंधित शाला के ए.एल.एम. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों से समय

उपलब्धतानुसार बारी-बारी से अवलोकन करने संबंधी चर्चा की गई। डी. एड. द्वितीय वर्ष के 20 छात्राध्यापकों को ए.एल.एम. विधि आधारित प्रशिक्षण में सम्मिलित किया गया तथा शेष 20 छात्राध्यापकों को परंपरागत विधि से अध्यापन-अभ्यास देने के लिए उन्मुखीकरण किया गया। इसमें ए.एल.एम. आधारित पाठ योजना व परंपरागत पाठ योजना निर्माण कर अध्यापन-अभ्यास का प्रदर्शन करवाया गया। इसके पश्चात् छात्राध्यापकों से कक्षा 6, 7, एवं 8 में ए.एल.एम. आधारित पाठ योजना प्रारूप के अनुसार पाठ योजना प्रस्तुत करवाई गई व अवलोकन किया गया।

सांख्यिकी संकलन—

अध्यापन-अभ्यास के अवलोकन बिंदुओं के आधार पर ए.एल.एम. का प्रभाव निम्न प्रकार से हुआ। सम्मिलित छात्राध्यापकों की संख्या 20 + 20 है।

क्रं.	प्रश्न	ए.एल.एम. आधारित पाठ		परंपरागत आधारित पाठ	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	शिक्षक द्वारा प्रस्तावना के प्रस्तुतीकरण में छात्रों ने रुचि प्रकट की।	20	100	14	70
2	शिक्षक ने छात्रों को समूह निर्माण के लिए मार्गदर्शन देकर समूह निर्माण करवाया।	19	95	0	0
3	एक समूह के छात्रों द्वारा पठन के दौरान अन्य छात्र ध्यानपूर्वक सुनते हुए पुस्तक में पठित विषय-वस्तु को देख रहे हैं।	20	100	15	75

4.	छात्र द्वारा वाचन में की गई अशुद्धियों को समूह के अन्य छात्र द्वारा दूर करने का प्रयत्न किया गया।	13	65	7	35
5.	छात्रों ने अन्विति का मौन वाचन कर कठिन शब्दों/नवीन शब्दों को रेखांकित कर उनका अर्थ (समूह के अन्य छात्रों से चर्चा कर/शब्द कोश में देखकर अथवा शिक्षक से पूछकर) जानने का प्रयत्न किया।	18	90	9	45
6.	अपनी समस्या-समाधान के लिए छात्रों ने समूह में आपस में चर्चा की।	17	85	1	5
7.	छात्रों ने विषय-वस्तु आधारित मानस चित्रांकन (mind map) करने का प्रयत्न किया।	20	100	0	0
8.	विद्यार्थी समूह प्रतिनिधि द्वारा मानस चित्रांकन प्रस्तुतीकरण में उत्साह से भाग लिया।	18	90	0	0
9.	शिक्षक ने सारांशीकरण के तरीकों का समय-समय पर मागदर्शन दिया जिससे बच्चों ने सारांशीकरण किया।	20	100	0	0
10.	क्या छात्रों ने शिक्षक से प्रश्न किए व टी.एल.एम. का उपयोग किया।	13	65	8	40
11.	क्या छात्रों ने विषय वस्तु आधारित प्रश्नों के उत्तर स्वयं क्रमानुसार कर लिखने का प्रयत्न किया।	14	70	3	15
12.	श्यामपट्ट कार्य में छात्रों की सहभागिता रही।	17	85	14	70
13.	शिक्षक द्वारा सारांश का प्रस्तुतीकरण किया जा रहा है।	20	100	5	25
14.	गतिविधि करने हेतु शिक्षक ने छात्रों को समय-समय पर सहयोग व मार्गदर्शन प्रदान किया।	20	100	6	30

15.	शिक्षक द्वारा मूल्यांकन परीक्षण किया जा रहा है।	19	95	10	50
16.	क्या शिक्षक ने विभिन्न बिंदुओं के दौरान छात्रों की आई कठिनाईयों को समय-समय पर नोट किया।	11	55	0	0
17.	शिक्षक द्वारा उपचारात्मक शिक्षण किया गया।	10	50	0	0
18.	पाठ के दौरान शिक्षक-छात्र दोनों की सक्रियता दिखाई दी।	19	95	6	30
19.	क्या छात्रों को अभिव्यक्ति का अवसर उपलब्ध हुआ।	20	100	4	20
20.	क्या अवधारणा की बेहतर समझ विकसित हुई।	18	90	5	25
21.	कक्षा में शिक्षक की भूमिका विद्यार्थियों के साथ एक सहयोगी और सुविधादाता के रूप में पाई गई।	20	100	5	25
22.	क्रियाकलाप आधारित अध्ययन के लिए बालकों में उत्सुकता दिखाई दी।	19	95	1	5
23.	शिक्षण प्रक्रिया बाल केंद्रित पाई गई।	20	100	0	0
24.	क्या कक्षा का वातावरण सहज था।	20	100	13	65
25.	बच्चों के मध्य परस्पर सहयोग की भावना दिखाई दी।	20	100	12	60

निष्कर्ष –

प्रस्तुत क्रियात्मक अनुसंधान के प्रदत्तों के सांख्यिकी विश्लेषण व विवेचना से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए —

- ए.एल.एम. परंपरागत विधि की तुलना में अध्यापन-अभ्यास में रोचक व उपादेय है।
- डी. एड. छात्राध्यापकों के अध्यापन- अभ्यास

प्रक्रिया में ए.एल.एम. आधारित पाठ योजना के प्रयोग का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित है।

- अध्यापन-अभ्यास में ए.एल.एम का प्रयोग संपूर्ण अधिगम के समय छात्र एवं शिक्षक को सक्रिय बनाए रखने के लिए प्रभावी है।

- ए.एल.एम. अध्यापन-अभ्यास में विद्यार्थी स्वयं स्वतंत्र रूप से अधिगम में आई समस्याओं को अपने समूह के छात्रों से चर्चा कर, तर्क-वितर्क कर हल करने के लिए प्रेरित होते हैं।
- ए.एल.एम. विधि आधारित अध्यापन-अभ्यास को परंपरागत यांत्रिकता से हटाकर नवीनता-नवाचार कर सकने योग्य शिक्षण की ओर ले जाती है।
- ए.एल.एम अध्यापन-अभ्यास को बाल केंद्रित रुचिकर आनंददायी अधिगम से युक्त बनाने के लिए प्रभावकारी है।
- ए.एल.एम. आधारित अध्यापन- अभ्यास कक्षा का वातावरण सहज बनाने व सीखने के लिए छात्रों के मध्य परस्पर सहयोग भावना को विकसित करने में प्रभावकारी है।
- ए.एल.एम. आधारित अध्यापन- अभ्यास कक्षा में छात्राध्यापकों की भूमिका एक सहयोगी के रूप में बनाने के लिए सकारात्मक है। बच्चों के स्वयं सीखने व अभिव्यक्त करने के लिए प्रभावी है।

सुझाव –

इस क्रियात्मक अनुसंधान के पश्चात् छात्राध्यापकों द्वारा निम्न सुझाव दिए गए जिससे ए.एल.एम. के प्रयोग से अध्यापन अभ्यास व शिक्षकों द्वारा शिक्षण को प्रभावी व उपादेय बनाया जा सकता है।

- ए.एल.एम. में कालखंड का समय 45 से 60 मिनट तक ही होना चाहिए ताकि छात्रों

को लंबी अवधि तक कक्षा में ही न बैठना पड़े तथा उनकी रुचि व एकाग्रता को बनाए रखा जा सके।

- कालखंड का समय कम कर विषय-वस्तु को भी कालखंड के समयानुसार पाठ योजना के लिए निश्चित किया जा सकता है।
- पूर्व प्राथमिक स्तर तक की कक्षाओं में इसी प्रकार के सक्रिय अधिगम विधि आधारित अध्यापन को प्रयोग में लाया जाए तो छात्रों के पूर्व माध्यमिक स्तर पर प्रवेश करने के बाद ए.एल.एम. सेतु सिद्ध होगा, छात्रों के लिए प्रेरक व मार्गदर्शक सिद्ध होगा।
- अंग्रेजी, संस्कृत जैसे भाषागत विषयों में मानस चित्रांकन के स्थान पर अन्य गतिविधि को समाहित किया जा सकता है।
- शालाओं में कक्षा ए.एल.एम. के अनुसार छात्रों को समूह में बैठकर विभिन्न गतिविधियाँ करवाई जाएँ और छात्रों को टेबल-कुर्सी के स्थान पर दरी पर बैठने की उपयोगिता बतायी जाएँ।
- छात्र संख्या के अनुपात में पर्याप्त शिक्षक होने चाहिए, अप्रशिक्षित अतिथि शिक्षक इस प्रकार के अध्यापन में सहयोगी सिद्ध नहीं होते।
- ए.एल.एम. आधारित अधिगम दो विषयों में प्रतिदिन होना चाहिए ताकि उसके प्रभाव को बढ़ाया जा सके।
- संपूर्ण दिन एक जैसी प्रक्रिया छात्रों में

- अरुचि उत्पन्न कर सकती है अतः ए.एल.एम. आधारित अध्यापन अभ्यास एक-एक घंटे के दो विषयों को लेकर हो तथा शेष समय कोई अन्य विधि से ताकि छात्रों की पूरे दिन-भर रुचि निरंतर बनी रहे।
- द्वितीय व तृतीय भाषा में संस्कृत से संस्कृत व अँग्रेज़ी-से-अँग्रेज़ी में मार्गदर्शन कठिनाई पैदा करता है। कम-से-कम तृतीय भाषा में हिंदी माध्यम को भी अपनाया जाना चाहिए।
 - ए.एल.एम. के प्रयोग में कक्षा में अन्य

शैक्षिक उपकरण भी होने चाहिए ताकि बच्चों के मार्गदर्शन में सहयोग मिल सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- (1) शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान— प्रो.के.पी. पाण्डे एवं डॉ. अमिता शर्मा।
- (2) सक्रिया अधिगम प्रविधि (ए.एल.एम) शिक्षक प्रशिक्षण संदर्शिका— मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल।
- (3) ए. एल. एम. विधि आधारित संस्कृत, हिंदी, सा. विज्ञान, अँग्रेज़ी विषयों की शिक्षक मार्गदर्शिकाएँ।

